

दानियेल की पुस्तक - संख्या उनहत्तर

पीढ़ीगत चक्र का अनावरण: एडवेंटिज़म के चार घोर पाप

Jeff Pippenger

2024-02-02

ईश्वर कभी नहीं बदलते, और इसलिए एडवेंटिज़म का अपनी चौथी पीढ़ी में न्याय होता है।

'और उसने उस व्यक्ति को पुकारा जो पटसन के वस्त्र पहने हुए था और जिसकी कमर से लेखक की दवात लटकी थी; और प्रभु ने उससे कहा, नगर के बीच में, यरूशलेम के बीच से होकर निकल, और उन पुरुषों के माथों पर एक चिह्न लगा दे जो वहाँ के बीच में किए जाने वाले सब घृणित कार्यों के कारण आहें भरते और रोते हैं। और दूसरों से उसने मेरे सुनते कहा, तुम उसके पीछे-पीछे नगर में होकर जाओ, और प्रहार करो; न किसी को बखाना, न दया करना; बूढ़ों और जवानों, कुमारियों, छोटे बच्चों और स्त्रियों—सबको सर्वथा मार डालो; पर जिस किसी पर वह चिह्न हो उसके निकट न जाना; और मेरे पवित्रस्थान से आरम्भ करना। तब उन्होंने उन वृद्ध पुरुषों से आरम्भ किया जो घर के सामने थे।'

यीशु जल्द ही स्वर्गीय पवित्रस्थान के दयासिंहासन को छोड़कर प्रतिशोध के वस्त्र पहनने वाले हैं, और परमेश्वर द्वारा दी गई ज्योति का प्रत्युत्तर न देने वालों पर अपने न्यायों द्वारा अपना क्रोध उंडेलेंगे। 'क्योंकि दुष्ट कर्म का दंड शीघ्र नहीं दिया जाता, इस कारण मनुष्यों के पुत्रों का मन बुराई करने के लिए उनके भीतर दृढ़ हो जाता है।' प्रभु ने उनके प्रति जो धैर्य और दीर्घ सहनशीलता दिखाई है, उससे कोमल होने के बजाय, जो परमेश्वर का भय नहीं मानते और सत्य से प्रेम नहीं करते, वे अपने दुष्ट मार्ग में अपने हृदयों को और दृढ़ कर लेते हैं। परन्तु परमेश्वर की सहनशीलता की भी सीमाएँ हैं, और बहुत से लोग इन सीमाओं को लांघ रहे हैं। वे अनुग्रह की सीमाओं से आगे निकल गए हैं; इसलिए परमेश्वर को हस्तक्षेप कर अपने ही सम्मान की रक्षा करनी होगी।

अमोरियों के विषय में प्रभु ने कहा: 'चौथी पीढ़ी में वे फिर यहाँ आएँगे, क्योंकि अमोरियों का अधर्म अभी परिपूर्ण नहीं हुआ है।' यद्यपि यह जाति अपनी मूर्तिपूजा और भ्रष्टता के कारण विशेष रूप से जानी जाती थी, तौभी उसने अपने अधर्म का प्याला अभी तक नहीं भर दिया था, और परमेश्वर उसके सर्वनाश का आदेश नहीं देने वाले थे। लोगों को दिव्य शक्ति का प्रगटीकरण स्पष्ट रीति से देखना था, ताकि उनके पास कोई बहाना न रह जाए। दयालु सृष्टिकर्ता उनके अधर्म को चौथी पीढ़ी तक सहने को तैयार थे। तब, यदि भलाई की ओर कोई परिवर्तन दिखाई न दे, तो उसके दण्ड उन पर आ पड़ने वाले थे।

अचूकता के साथ अनन्त परमेश्वर अब भी सभी राष्ट्रों का हिसाब रखता है। जब तक वह पश्चाताप के लिए बुलाहटों के साथ अपनी दया प्रदान करता रहता है, तब तक यह हिसाब खुला रहेगा; परन्तु जब संख्याएँ उस सीमा तक पहुँच जाती हैं जिसे परमेश्वर ने निर्धारित किया है, उसके क्रोध की कार्यवाही आरंभ हो जाती है। हिसाब बंद कर दिया जाता है। दैवी धैर्य समाप्त हो जाता है। अब उनके पक्ष में दया की कोई विनती नहीं रहती।

भविष्यद्वक्ता ने युगों पर दृष्टि डालते हुए अपने दर्शन में इस समय को देखा था। इस युग के राष्ट्र अभूतपूर्व दयाओं के प्राप्तकर्ता रहे हैं। स्वर्ग की सर्वोत्तम आशीषें उन्हें दी गई हैं, परन्तु उनके विरुद्ध बढ़ा हुआ अहंकार, लोभ, मूर्तिपूजा, परमेश्वर के प्रति तिरस्कार और घोर कृतघ्नता लिखी हुई हैं। वे तेजी से परमेश्वर के साथ अपना लेखा बंद कर रहे हैं।

पर जो मुझे काँपने पर विवश करता है, वह यह तथ्य है कि जिन्हें सबसे बड़े प्रकाश और विशेषाधिकार मिले थे, वे प्रचलित अधर्म से दूषित हो गए हैं। अपने चारों ओर के अधर्मियों से प्रभावित होकर, अनेक लोग, यहाँ तक कि जो सत्य का अंगीकार करते हैं, ठंडे पड़ गए हैं और बुराई की प्रबल धारा से बहा दिए गए हैं। सच्ची भक्ति और पवित्रता का जो व्यापक उपहास किया जा रहा है, वह उन लोगों को, जो परमेश्वर के साथ घनिष्ठ रूप से नहीं जुड़े हैं, उसकी व्यवस्था के प्रति अपनी श्रद्धा खो देने की ओर ले जाता है। यदि वे प्रकाश का अनुसरण कर रहे होते

और हृदय से सत्य का पालन कर रहे होते, तो जब इसे इस प्रकार तुच्छ समझकर अलग रख दिया जाता है, तब यह पवित्र व्यवस्था उन्हें और भी अधिक मूल्यवान प्रतीत होती। जैसे-जैसे परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति अनादर अधिक प्रकट होता जाता है, उसके पालन करने वालों और संसार के बीच की विभाजन-रेखा उतनी ही स्पष्ट होती जाती है। जिस प्रकार एक वर्ग में दैवी आज्ञाओं के प्रति तिरस्कार बढ़ता है, उसी प्रकार दूसरे वर्ग में दैवी आज्ञाओं के प्रति प्रेम बढ़ता जाता है।

संकट तीव्र गति से निकट आ रहा है। तेजी से बढ़ते आँकड़े यह दर्शाते हैं कि परमेश्वर के न्याय के आगमन का समय लगभग आ पहुँचा है। यद्यपि वह दण्ड देने में अनिच्छुक है, तथापि वह दण्ड देगा, और वह भी शीघ्र। जो प्रकाश में चलते हैं वे निकट आती हुई विपत्ति के चिन्ह देखेंगे; परन्तु उन्हें विनाश की शांत, उदासीन प्रतीक्षा में बैठ नहीं जाना चाहिए, इस विश्वास से अपने आपको दिलासा देते हुए कि न्याय के दिन परमेश्वर अपने लोगों को शरण देगा। कदापि नहीं। उन्हें यह समझना चाहिए कि दूसरों को बचाने के लिए परिश्रमपूर्वक कार्य करना उनका कर्तव्य है, और सहायता के लिए दृढ़ विश्वास के साथ परमेश्वर की ओर देखना चाहिए। 'धर्मो मनुष्य की प्रभावशाली प्रार्थना बहुत कुछ कर दिखाती है।'

धर्मपरायणता का खमीर अपनी शक्ति पूरी तरह नहीं खो चुका है। जब कलीसिया पर संकट और निराशा अपनी चरम सीमा पर होंगे, तब प्रकाश में खड़े वे थोड़े लोग देश में किए जा रहे घृणित कर्मों के कारण आहें भरेंगे और रोएंगे। परंतु विशेष रूप से उनकी प्रार्थनाएँ कलीसिया के लिए उठेंगी, क्योंकि उसके सदस्य संसार की रीति पर चल रहे हैं।

इन थोड़े से विश्वासयोग्य लोगों की गंभीर प्रार्थनाएँ व्यर्थ नहीं जाएँगी। जब प्रभु प्रतिशोधकर्ता के रूप में प्रकट होंगे, तब वह उन सब के रक्षक के रूप में भी आएँगे जिन्होंने विश्वास को उसकी पवित्रता में अक्षुण्ण रखा है और अपने को संसार से निष्कलंक रखा है। इसी समय परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की है कि वह अपने चुने हुएों का बदला लेगा, जो रात-दिन उसकी ओर पुकारते हैं, यद्यपि वह उनके साथ दीर्घकाल तक धैर्य धरता है।

"आज्ञा यह है: 'नगर के बीच से, यरूशलेम के बीच से होकर निकलो, और उन मनुष्यों के मार्गों पर एक चिन्ह लगा दो जो वहाँ के बीच में किए जाने वाले सब घृणास्पद कामों के कारण आहें भरते और रोते हैं।' ये आहें भरने और रोने वाले लोग जीवन के वचन लोगों के सामने रखते आए थे; उन्होंने ताड़ना दी थी, परामर्श दिया था, और विनती की थी। जो लोग परमेश्वर का अपमान कर रहे थे, उनमें से कुछ ने पश्चाताप किया और उसके सामने अपने हृदयों को दीन किया। परन्तु प्रभु की महिमा इस्राएल से विदा हो गई थी; यद्यपि बहुतों ने अब भी धर्म के बाहरी रूपों को बनाए रखा, उसकी सामर्थ्य और उपस्थिति नहीं पाई जाती थी।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 207-210.

उस अंश में सिस्टर वाइट जिस परमेश्वर के न्याय के चित्रण की ओर इंगित कर रही हैं, वह यरूशलेम नगर पर लाया गया न्याय है, जो अंतिम दिनों में सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया है। न्याय रविवार के कानून पर अंतिम रूप से तय होता है, क्योंकि वहीं परमेश्वर की मुहर और पशु की छाप लगाई जाती है। यहजेकेल के आठवें अध्याय में चार क्रमशः बढ़ती हुई घृणित बातों की पहचान की गई है। पहली आयत इस बात पर बल देती है कि यह दर्शन अनुग्रह का समय समाप्त होने से ठीक पहले समझा जाना है, क्योंकि वह छठे वर्ष के छठे महीने के पाँचवें दिन का उल्लेख करती है।

यहेजेकेल को उस ऐतिहासिक संदर्भ-बिंदु को शामिल करने की आवश्यकता नहीं थी। वह सरलता से यह लिख सकता था, "और ऐसा हुआ कि जब मैं अपने घर में बैठा था, और यहूदा के प्राचीन मेरे सामने बैठे थे, तब वहाँ प्रभु परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा।" यह तथ्य कि उसने "666" से ठीक पहले वाले दिन का संदर्भ शामिल किया, भविष्यवाणी के विद्यार्थियों के लिए एक भविष्यसूचक संकेत है। जिन्होंने पशु के नाम की संख्या पर विजय पाई है, वे जानते हैं कि "666" यीशु मसीह के प्रकाशन का एक तत्व है, जो अनुग्रह का समय समाप्त होने से ठीक पहले खोला जाता है। वे यह इसलिए जानते हैं क्योंकि वे परमेश्वर की प्रजा हैं, जो पतरस के अनुसार, "बीते समयों में परमेश्वर की प्रजा न थे।"

पहला पतरस अध्याय दो में वे लोग, जो अब परमेश्वर की प्रजा हैं, "यह चख चुके हैं कि प्रभु कृपालु है।" वे वही हैं जिन्होंने भविष्यवाणी के रूप में परमेश्वर के वचन को "खा" लिया है, उनके विपरीत जिन्होंने परमेश्वर के वचन को खाने से इन्कार कर दिया। सभी भविष्यद्वक्ता अंतिम दिनों के विषय में बोलते हैं, और यूहन्ना अध्याय छह में, यीशु ने यह संदेश दिया कि उसके चेलों को उसका मांस खाना और उसका लहू पीना चाहिए। उसी अध्याय के पद 66 में, जिन चेलों ने उसका मांस खाने और उसका लहू पीने से इन्कार किया, उन्होंने ऐसा किया।

तब से उसके बहुत से चले पीछे हट गए, और उसके साथ फिर न चले। यूहन्ना 6:66.

जो बुद्धिमान अंतिम दिनों में मसीह का मांस खाते और उनका रक्त पीते हैं, वे समझते हैं कि मसीह, पालमोनी के रूप में, अद्भुत गणक हैं, और जब उनका हस्ताक्षर प्रस्तुत किया जाता है तो वे उसे पहचान लेते हैं। "665" की संख्या यहजेकेल अध्याय आठ की आरंभिक आयत में मौजूद है, और जो कोई देखना चाहे, उसके लिए वह कम से कम दो महत्वपूर्ण भविष्यवाणी से संबंधित बिंदुओं की पहचान करती है। पहला यह कि इस संदेश को रविवार के कानून से पहले की एक समयावधि को आवृत करने वाला समझा जाना चाहिए। दूसरा यह कि "666" की संख्या प्रकाशितवाक्य की केवल दो आयतों में से एक में है, जिनके बारे में यह स्पष्ट किया गया है कि "ज्ञानी" अंतिम दिनों में समझेंगे।

यहाँ बुद्धि है। जिसके पास समझ हो, वह पशु की संख्या गिने: क्योंकि वह मनुष्य की संख्या है; और उसकी संख्या छह सौ छियासठ है। प्रकाशितवाक्य 13:18.

जो "बुद्धिमान" अन्तिम दिनों में ज्ञान की वृद्धि को समझते हैं, जब यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य खोला जाता है, वे जानेंगे कि "666" एक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी-संबंधी प्रतीक है, क्योंकि वे उस संख्या पर विजय प्राप्त कर चुके होंगे। इसलिए यहजेकेल अध्याय आठ में एक क्रमशः बढ़ती हुई बगावत प्रस्तुत करता है, जिसका प्रतिनिधित्व चार क्रमशः बढ़ती हुई घृणित बातों द्वारा किया गया है। अंतिम घृणितता मूर्खों को सूर्य के आगे झुकने वालों के रूप में पहचानती है, और इस प्रकार अन्तिम दिनों में यरूशलेम (एडवेंटिज़्म) के न्याय को चिह्नित करती है। वह न्याय चौथी पीढ़ी में होता है। वे चार घृणित बातें लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म की चार पीढ़ियों के प्रतीक हैं।

पहली पीढ़ी 1863 में उस विद्रोह के साथ शुरू हुई जो मूसा की 'सात बार' की शपथ के विरुद्ध था। पच्चीस वर्ष बाद, 1888 का विद्रोह प्रकट हुआ। इकतीस वर्ष बाद 1919 का विद्रोह हुआ, जिसका प्रतिनिधित्व डब्ल्यू. डब्ल्यू. प्रेस्कॉट की पुस्तक 'मसीह का सिद्धांत' ने किया। उसके अड़तीस वर्ष बाद, 1957 में, 'सिद्धांत पर प्रश्न' नामक पुस्तक द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया विद्रोह हुआ। अब हम यह दिखाना शुरू करेंगे कि ये चार मील के पत्थर यहजेकेल अध्याय आठ की चार घृणित बातों के साथ क्यों मेल खाते हैं।

1863 में लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म ने एक नया चार्ट प्रस्तुत किया, ताकि उन दो चार्टों का स्थान ले सके जो हबक्कूक अध्याय दो की इस आज्ञा, "दर्शन को लिख और उसे पट्टिकाओं पर स्पष्ट कर," की पूर्ति थे। 1863 के चार्ट ने भविष्यवाणी के चित्रण से "सात समय" को हटा दिया, जबकि 1260, 1290 और 1335 के साथ यह दो पवित्र चार्टों पर विद्यमान था। हबक्कूक में आज्ञा यह बताती है कि पट्टिकाएँ (बहुवचन) ऐसे ढंग से प्रकाशित की जाएँगी कि "जो उसे पढ़े वह दौड़ सके"। 1863 का चार्ट लक्ष्य से इतना भटका हुआ था कि उसे समझाने के लिए साथ में एक व्याख्यात्मक पर्चे की आवश्यकता पड़ती थी। अतिरिक्त पर्चे के बिना 1863 के चार्ट को देखकर "दौड़ना" संभव नहीं था।

और प्रभु ने मुझे उत्तर दिया और कहा, "दर्शन लिख, और उसे पट्टिकाओं पर स्पष्ट लिख, ताकि जो उसे पढ़े वह दौड़ सके।" हबक्कूक 2:2.

1863 का चार्ट एक नकली था, जिसे सच्चे को छिपाने के लिए बनाया गया था, ठीक वैसे ही जैसा विलियम मिलर ने अपने स्वप्न में देखा था। वे दो पवित्र चार्ट उस वाचा के प्रतीक थे जो मसीह ने उन लोगों के साथ की थी, जिन्होंने अभी-अभी पृथ्वी के पशु के सच्चे प्रोटेस्टेंट सींग के रूप में अपनी स्थिति ग्रहण की थी। वे दोनों चार्ट मिलरवादियों

और मसीह के बीच वाचा-संबंध के प्रतीक थे, जो 1844 में अचानक अपने मंदिर में आए, और जब वे आए, तो वाचा के दूत के रूप में आए। प्राचीन इस्राएल आधुनिक इस्राएल का प्रतिरूप है, और जब मसीह ने प्राचीन इस्राएल को मिस्र की दासता से बाहर निकाला, तो वह उस समय का प्रतिरूप था जब वे आधुनिक इस्राएल को पोप के शासन के बारह सौ साठ वर्षों की दासता से बाहर निकालने वाले थे। बहन व्हाइट इन दोनों इतिहासों को बार-बार समांतर इतिहासों के रूप में प्रतिपादित करती हैं।

“हम पर बीते युगों का संचित प्रकाश चमक रहा है। इस्राएल के विस्मरण का वृत्तांत हमारे प्रबोधन के लिए सुरक्षित रखा गया है। इस युग में परमेश्वर ने हर जाति, कुल, और भाषा में से अपने लिए एक प्रजा को एकत्र करने हेतु अपना हाथ बढ़ाया है। आगमन आंदोलन में उसने अपनी निज-सम्पत्ति के लिए कार्य किया है, ठीक वैसे ही जैसे उसने इस्राएलियों को मिस्र से निकालकर ले जाते समय उनके लिए किया था। 1844 की महान निराशा में उसकी प्रजा के विश्वास की परीक्षा उसी प्रकार हुई, जैसे लाल समुद्र के किनारे इब्रानियों के विश्वास की हुई थी।” टेस्टिमोनीज़, खंड 8, 115, 116.

जब प्रभु ने प्राचीन इस्राएल के साथ वाचा बाँधी, तो उन्होंने वाचा-संबंध का प्रतिनिधित्व करने के लिए दो पट्टिकाएँ दीं। जब प्रभु ने आधुनिक इस्राएल के साथ वाचा बाँधी, तब भी उन्होंने वाचा-संबंध का प्रतिनिधित्व करने के लिए दो पट्टिकाएँ दीं। दस आज्ञाओं की दो पट्टिकाएँ हबक्कुक की दो पट्टिकाओं का प्रतीक हैं। लाल समुद्र पार करने के थोड़े ही समय बाद उन्होंने उन्हें वे दो पट्टिकाएँ दीं; इस घटना को बहन वाइट 1844 की महान निराशा के साथ संबद्ध करती हैं। 1844 के शीघ्र बाद, भविष्यवाणी के इतिहास के संदर्भ में, प्रभु ने दूसरी पट्टिका प्रस्तुत की। प्राचीन इस्राएल को परमेश्वर की व्यवस्था के भंडारी बनाया गया, और आधुनिक इस्राएल को न केवल परमेश्वर की व्यवस्था, बल्कि उन महान भविष्यवाणीगत सत्यों के भी भंडारी बनाया गया।

"परमेश्वर ने आज के समय में अपनी कलीसिया को, जैसे उसने प्राचीन इस्राएल को बुलाया था, पृथ्वी पर एक ज्योति के रूप में खड़ा होने के लिए बुलाया है। सत्य के शक्तिशाली क्लीवर, अर्थात् पहले, दूसरे और तीसरे स्वर्गदूतों के संदेशों के द्वारा, उसने उन्हें कलीसियाओं और संसार से अलग कर दिया है ताकि उन्हें अपने साथ पवित्र निकटता में ले आए। उसने उन्हें अपनी व्यवस्था के संरक्षक बना दिया है और इस समय की भविष्यवाणी के महान सत्यों को उनके सुपुर्द कर दिया है। जैसे पवित्र वचन प्राचीन इस्राएल को सौंपे गए थे, वैसे ही ये संसार तक पहुँचाने के लिए एक पवित्र न्यास हैं।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 455.

पहली दो आज्ञाएँ मूर्तिपूजा के प्रति परमेश्वर की घृणा को दर्शाती हैं, और उन्हीं पहली दो आज्ञाओं में वह यह बताता है कि दंड तीसरी और चौथी पीढ़ी तक दिया जाता है, क्योंकि वह यह बताता है कि वह एक ईर्ष्यालु परमेश्वर है।

उस समय व्यवस्था केवल इब्रानियों के हित के लिए ही नहीं सुनाई गई थी। परमेश्वर ने उन्हें अपनी व्यवस्था के संरक्षक और रखवाले बनाकर उनका सम्मान किया, परन्तु उसे समस्त संसार के लिए एक पवित्र अमानत के रूप में रखा जाना था। दस आज्ञाओं के उपदेश समस्त मानवजाति के अनुकूल हैं, और वे समस्त मनुष्यों के मार्गदर्शन और अनुशासन के लिए दिए गए थे। दस उपदेश, संक्षिप्त, व्यापक और अधिकारपूर्ण, मनुष्य के परमेश्वर के प्रति और अपने सह-मनुष्यों के प्रति कर्तव्यों को समेटते हैं; और ये सब प्रेम के महान मूलभूत सिद्धांत पर आधारित हैं। 'तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा, अपनी सारी शक्ति और अपने सारे मन से प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।' लूका 10:27. यह भी देखिए: व्यवस्थाविवरण 6:4, 5; लैव्यव्यवस्था 19:18. दस आज्ञाओं में इन सिद्धांतों का विस्तार से प्रतिपादन किया गया है, और उन्हें मनुष्य की स्थिति और परिस्थितियों पर लागू किया गया है।

'तू मेरे सम्मुख किसी अन्य देवता को न मानना।'

यहोवा, अनादि, स्वयंभू, अजन्मा, जो सबका स्रोत और पालनकर्ता है, केवल उसी को परम श्रद्धा और उपासना का अधिकार है। मनुष्य के लिए यह वर्जित है कि वह अपने प्रेम या सेवा में किसी अन्य को प्रथम स्थान दे। हम जो कुछ प्रिय मानते हैं, यदि वह परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम घटाए या उसके प्रति हमारी देय सेवा में बाधा डाले,

तो हम उसी को अपना देवता बना लेते हैं।

तू अपने लिए कोई गढ़ी हुई प्रतिमा, या किसी भी वस्तु का कोई रूप, जो ऊपर आकाश में है, या जो नीचे पृथ्वी पर है, या जो पृथ्वी के नीचे जल में है, न बनाना; तू उनके आगे न झुकना, और न उनकी सेवा करना।

दूसरी आज्ञा यह निषिद्ध करती है कि सच्चे परमेश्वर की आराधना मूर्तियों या प्रतिरूपों के द्वारा की जाए। अनेक मूर्तिपूजक राष्ट्र दावा करते थे कि उनकी मूर्तियाँ मात्र आकृतियाँ या प्रतीक हैं जिनके द्वारा परमेश्वर की आराधना की जाती थी, परन्तु परमेश्वर ने ऐसी आराधना को पाप ठहराया है। अनन्त परमेश्वर को भौतिक वस्तुओं द्वारा निरूपित करने का प्रयत्न मनुष्य की परमेश्वर के विषय में धारणा को घटा देगा। यहोवा की अनन्त परिपूर्णता से हटकर मन, सृष्टिकर्ता की अपेक्षा सृष्ट प्राणी की ओर आकर्षित हो जाएगा। और जैसे उसकी परमेश्वर के विषय में धारणाएँ नीचे गिरेगी, वैसे ही मनुष्य स्वयं भी अधःपतित हो जाएगा।

'मैं, तेरा परमेश्वर यहोवा, ईर्ष्यालु परमेश्वर हूँ।' परमेश्वर का अपने लोगों के साथ घनिष्ठ और पवित्र संबंध विवाह की उपमा में दर्शाया गया है। क्योंकि मूर्तिपूजा आध्यात्मिक व्यभिचार है, इसलिए उसके विरुद्ध परमेश्वर की अप्रसन्नता को उचित ही ईर्ष्या कहा गया है। पितृपुरुष और भविष्यद्वक्ता, 305, 306.

परमेश्वर की ईर्ष्या विशेष रूप से मूर्तिपूजा के विरुद्ध प्रकट होती है, और यह कोई संयोग नहीं है कि यहेजकेल के आठवें अध्याय में पहली घृणास्पद वस्तु "ईर्ष्या की प्रतिमा" है।

और ऐसा हुआ कि छठे वर्ष में, छठे महीने में, महीने के पाँचवें दिन, जब मैं अपने घर में बैठा था और यहूदा के प्राचीन मेरे सामने बैठे थे, तब वहाँ प्रभु यहोवा का हाथ मुझ पर पड़ा। तब मैंने देखा, और क्या देखता हूँ, आग के रूप-रंग के समान एक आकृति; उसकी कटि से नीचे तक आग, और उसकी कटि से ऊपर तक दीप्ति के समान, अम्बर के रंग जैसी। और उसने हाथ की सी आकृति बढ़ाई और मेरे सिर के बालों की एक लट से मुझे पकड़ लिया; और आत्मा ने मुझे पृथ्वी और आकाश के बीच उठा लिया, और परमेश्वर के दर्शन में मुझे यरूशलेम ले आया, उस भीतरी फाटक के प्रवेश-द्वार पर जो उत्तर की ओर मुख किए हुए है; जहाँ ईर्ष्या को भड़काने वाली प्रतिमा का आसन था। और देखो, वहाँ इस्राएल के परमेश्वर की महिमा थी, जैसा दर्शन मैंने मैदान में देखा था। तब उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के पुत्र, अब अपनी आँखें उत्तर की ओर उठाकर देख। सो मैंने अपनी आँखें उत्तर की ओर उठाई, और देखो, उत्तर की ओर वेदी के फाटक के प्रवेश पर वही ईर्ष्या की प्रतिमा थी। यहेजकेल 8:1-5.

ईर्ष्या की मूर्ति उन चार क्रमशः बढ़ती घृणित बातों में पहली है जो यहेजकेल को दिखाई गईं। ईर्ष्या की मूर्ति एडवेंटिज़्म में बढ़ती हुई बगावत की चार पीढ़ियों में से पहली की शुरुआत का प्रतीक है। पहली पीढ़ी 1863 में शुरू हुई।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

"प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं में से प्रत्येक ने अपने समय की अपेक्षा हमारे लिए अधिक कहा, ताकि उनकी भविष्यद्वक्ताएँ हमारे लिए प्रभावी हों। 'ये सब बातें उन पर दृष्टान्त के लिये घटीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये लिखी गईं, जिन पर जगत के अन्तिम युग आ पहुँचे हैं।' 1 कुरिन्थियों 10:11. 'वे अपनी नहीं, परन्तु हमारी सेवा में इन बातों को प्रकट करते थे, जिनका अब तुम्हें उन लोगों के द्वारा समाचार दिया गया है जिन्होंने स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हें सुसमाचार सुनाया; और इन बातों पर स्वर्गदूत भी दृष्टि लगाने की लालसा रखते हैं।' 1 पतरस 1:12...."

"बाइबल ने इस अंतिम पीढ़ी के लिए अपने खजानों को संचित किया है और उन्हें एक साथ बाँध रखा है। पुराने नियम के इतिहास की सभी महान घटनाएँ और गंभीर व्यवहार इस अंतिम समय में कलीसिया में दोहराए गए हैं, और दोहराए जा रहे हैं।" Selected Messages, book 3, 338, 339.